श्री कृष्ण चालीसा

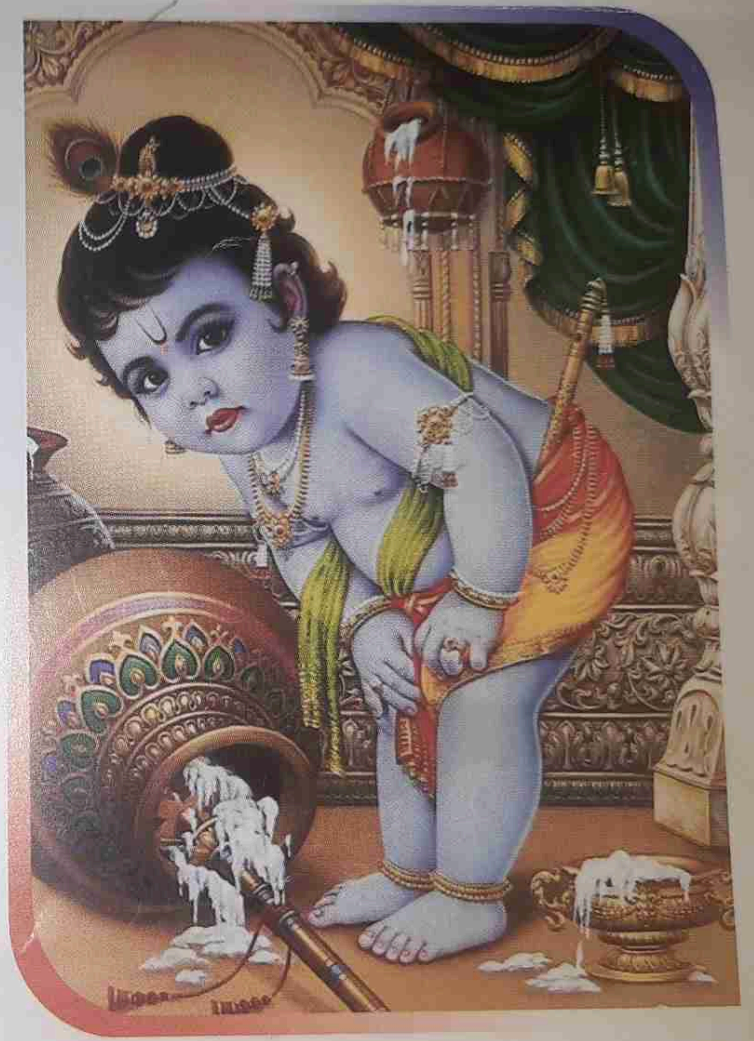

"ॐ श्री कृष्ण परम् पुरुषाय नम:"

श्री

कृष्ण चालीसा

वासुदेव श्री कृष्ण नारायण।। हे मन करो कृष्ण गुण गायन।। जै गिरधर गोपाल कन्हैय्या।। जै माधव जै जगत् रचैय्या।। जै नन्दलाल गोवर्धनधारी।। मुरली मनोहर कृष्ण मुरारी।। जै गोविंद देवकीनंदन।। जै केशव जै असुर निकन्दन

।। मोर मुकुट पीतांबर सोहे।। कमलनयन सब के मन मोहे।। जै दामोदर दीनदयाला।। जै जै जै श्री कृष्ण कृपाला ।। गोपीवल्लभ नीलनारायण।। कृष्ण नाम है परम् रसायन।। जै घनश्याम भगत् भयहारी।। जै मधुसूदन भव जल तारी।। जै जै विठ्ठलनाथ सुजान।। जै जै सर्व कला भगवान।। जै जै जै गोपियन चित्तचोर।। जै जै जै जै नंदकिशोर।। पांडवों की हरि

रक्षा कीनी।। बार बार अपदा हर लीनी।।
जै जै कृष्णचंद्र यदुराई।। ध्रुपदसुता की
विपत् मिटाई।। महाप्रभु का रूप धराए।।
भक्ति का प्रताप दिखाए।। मीरा के
गिरधर गोपाल।। सदा भजो श्री कृष्ण
कृपाल।। जै जै सूरदास के श्याम।। जै जै
जै प्रभु पूरन काम।। जै नरसी के
साँवरिया।। सब जग खाए तेरा दिया।।
भगत् जनों को तार दिया।। दुष्टों का संहार

किया।। जै जै राधारमण कन्हाई।। अपने
जन की पीड़ मिटाई।। सदा हरि इच्छया में
रह।। स्वासों स्वासा कृष्ण कृष्ण कह।।
कलयुग प्रगटे शिर्डी धाम।। साईं बन आए
घनश्याम।। मस्जिद बनी द्वारकामाई।।
ता में बसते कृष्ण कन्हाई।। भगत जनों को
निर्भय कीना।। हाथ दे अभय पद दीना।।

हाथ दे अभय पद दीना।।

भक्ति भाव से जो पढ़े श्री कृष्ण चव्वालीसा।। ता पर सदा दयाल हों साईं जगदीशा।। हरि गुण हरि की महिमा है पार उतारनहार।। साईं का कृपा प्रसाद पढ़िये बारम्बार।।

"ॐ साईं हरि गोविन्दाय नमः"

"ॐ श्री साईं."